Journal of Advances in Science and Technology
Vol. 15, Issue No. 1, March-2018, ISSN 2230-9659

प्रियदर्शिका नाटिका का मूल्यांकन: (नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से)

Dr. Kumari Pramila*

Flat No. 606/F, Mundeshwari Enclave, Khajpura, Patna-14, Bihar

सार – ***हर्ष नाट्य रचना में संस्कृत नाट्यपरम्परा में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। प्रणय नाटिकाओं के रचयिता के रूप में हर्ष का स्थान बहुत सम्मानित है। इनकी रचनाओं पर कालिदास एवं भास का प्रभाव निष्चित रूप से परिलक्षित है। कालिदास के "मालविकाग्निमित्रम्" नाटक के अनकरण पर उन्होंने दो प्रणय नाटिकायें लिखी हैं। "उदयन" से संबंधित कथानक को लेने में हर्ष ने भास का अनुकरण किया है। परन्तु हर्ष के कथानक भास के कथानकों से सर्वथा भिन्न है। प्रणय नाटकों में जो कमनीय कोमल तथा मनोरम तत्व होना चाहिए, हर्ष ने अपनी रचनाओं में उन सबका उपयोग किया है। मानवीय भावनाओं के साथ प्रकृति का पूर्ण सामंजस्य स्थापित करने में वे बहुत कुछ कालिदास के समान ही सफल है। उनकी रचनाओ में प्रणय की उद्भावना और विकास प्रकृति के सुरम्य वातावरण में हुआ है। "प्रियदर्शिका", "रत्नावली" और "नागानन्द" इन तीनो कृतियों में यह विशेषता परिलक्षित होती है।***

----------X----------

हर्ष की रचना शैली सरल और सुबोध है। वे वर्णित वस्तु के सम्पूर्ण चित्र को और सम्पूर्ण विशेषताओ को उज्ज्वल रूप में प्रस्तुत करते हैं। ये विशेषताएँ उनके तीनों कृतियों में परिलक्षित होती है। नाट्य के मध्य अन्य नाटक का आयोजन उनकी एक अन्य शास्त्रीय विशेषता है, जिसको नाट्यशास्त्र में गर्भांक कहा गया है। उनकी इसी विशेषता का अनुकरण भवभूति ने "उतररामचरित में" और राजशेखर ने ''बालारामायण'' में किया है। प्रणय नाटिका की रचना हर्ष की इस विशेषता का उतरवर्ती कवियों पर निष्चित प्रभाव पड़ा था। राजशेखर की कर्पूरमंजरी और विद्धशालभंजिका, विल्हण की कर्णसुन्दरी तथा मथुरानाथ की वृषभानुजा निश्चय ही हर्ष से प्रभावित है। हर्ष की कृतियों में अभिनेयता का महान् गुण है। वे आकार में छोटी होने के कारण अभिनय में कोई कठिनाई उपस्थित नहीं करती। उनके छोटे-छोटे संवाद मार्मिक एवं प्रभावोत्पादक हैं।

संस्कृत नाट्यपरम्परा में कालिदास के पश्चात् जिस कवि को लिया जा सकता हैं, वे हर्ष ही हैं, जिन्होंने शासन कार्य की अति व्यस्तता के मध्य भी अपनी साहित्यिक प्रतिभा की उद्भावना की और उसके द्वारा सहत्दयों के हत्दय को चमत्कृत किया। उनका साहित्य केवल नाटिकाओं की परम्परा के लिए ही नही, अपितु नाटकीय एवं काव्य गुणों के लिए भी संस्कृत साहित्य में अनुपम है।

काव्य में कथावस्तु दो भागों में विभक्त होता है आधिकारिक एवं प्रासंगिक। आधिकारिक कथा मुख्य कथा है। इसमें नायक को फल की प्राप्ति होती है। प्रियदर्शिका नाटिका में उदयन एवं प्रियदर्शिका का वृत्तान्त आधिकारिक कथा है, जिसमें उदयन को प्रियदर्शिका रूप में फल की प्राप्ति होती है।

प्रासंगिक कथा दो प्रकार की होती है पताका और प्रकरी। पताका कथा मुख्य कथा के साथ दूर तक चलती है। प्रियदर्शिका में महारानी वासवदता का वृत्तान्त पताका कथा है जो नाटिका के प्रारम्भ से लेकर अंत तक छाया रहता है। यह नायक को नायिका की प्राप्ति में सहायक है, क्योंकि बिना वासवदत्ता की कृपा के उदयन को प्रियदर्शिका प्राप्त नहीं हो सकती थी।

नाटिका में ऐसी अनेक घटनाओं के संकेत है, जो प्रकरी कथा कहे जा सकते है। विन्धयकेतु पर विजयसेना का आक्रमण, दृढ़वर्मा के कंचुकी का रंगमंच पर आना, इन्दीवरिका और मनोरमा के वृत्तान्त, सांकृत्यायनी द्वारा नाटक का निबन्धन, अंगारवती द्वारा वासवदत्ता के पास पत्र भेजना, कलिंगराज के युद्ध में पराजय का वृत्तान्त आदि प्रकरी कथा कहे जा सकते हैं।

www.ignited.in

अर्थप्रकृतियाँ

नाटकीय कथावस्तु का संघटन पाँच अर्थप्रकृतियों द्वारा होता है ये हैं - बीज, बिन्दु, पताका प्रकरी एवं कार्य।

1. **बीज -** बीज वह तत्व है जो अभिनय के प्रारंभ में संक्षेप में तथा बाद में जिसका अनेक प्रकार से विस्तार हो। प्रथम अंक में विजयसेन द्वारा प्रियदर्शिका को राजा के लिए सौंपना बीज तत्व को व्यक्त करता है। उसमें सम्भावना होती है कि प्रियदर्शिका को उदयन प्राप्त करेंगे।

2. **बिन्दु -** घटनाओं द्वारा कथासूत्र के टूट जाने पर मूलकथा को पुनः जोड़ने वाला तत्व बिन्दु है।

द्वितीय अंक में विदूषक द्वारा प्रियर्शिका से यह कहना कि तुम्हारी रक्षा तो सम्पूर्ण पृथिवी की रक्षा करने में समर्थ वत्सराज उदयन कर रहे हैं। बिन्दु तत्व है। यहाँ आरण्यका के हृदय में उदयन के प्रति औत्सुक्य एवं अनुराग की उत्पति हुई है तथा उन दोनों के हृदय में अनुराग उत्पन्न होने से मिलन की सम्भावनाएँ बढ़ गई है।

3. **पताका -** आधिकारिक कथा के साथ दूर तक चलने वाली प्रासंगिक कथा पताका कहलाती है। यह नायक के लिए फल की प्राप्ति में सहायक है। "प्रियदर्शिका" नाटिका में वासवदता का वृत्तान्त पताका है। वह फल प्राप्ति में नायक का सहायक है।

4. **प्रकरी -** कथानक के एक भाग में रहने वाले कथांष प्रकरी कहलाते हैं। विन्ध्यकेतु पर विजयसेन का आक्रमण दृढ़वर्मा का रंगमंच पर आना, इन्दीवरिका एवं मनोरमा का वृत्तान्त आदि प्रकरी कथाएँ हैं।

5. **कार्य -** नाटकीय कथा में फल की प्राप्ति कार्य है। चतुर्थ अंक में उदयन द्वारा प्रियदर्शिका को प्राप्त करना कार्य है।

कार्यावस्थाएँ

नाटकीय कथा में घटनाओं की पाँच अवस्थाएँ होती हैं, जिनको कार्यावस्था कहते हैं। ये कार्यावस्थाएँ पाँच होती हैः-

1. **आरम्भ -** मुख्य फल को प्राप्त करने के लियें नायक द्वारा किया जाने वाला फल आरम्भ है। विजयसेन द्वारा प्रियदर्शिका के लाये जाने पर उदयन का यह कथन - "यदा वरयोग्या भविष्यति तदा मां स्मारय" आरम्भ की अवस्था है। इसमें उदयन द्वारा प्रियदर्शिका को प्राप्त करने की सम्भावना व्यक्त होती है।

2. **यत्न -** फल को प्राप्त करने के लिए नायक द्वारा किया जाने वाला प्रयास यत्न है। द्वितीय अंक में राजा उदयन द्वारा झाड़ियों में छिपकर प्रियदर्शिका को देखना उसको भौंरो से बचाने के लिए जाना, मिलन हेतु अभिनय की योजना बनाना यत्न है।

3. **प्राप्त्याशा -** अनुकूल परिस्थितियों के होने पर फल प्राप्ति की आशा साथ में विघ्नों की भी सम्भावना हो तो वह प्राप्त्याशा होता है। दूसरे अंक में प्रियदर्शिका की अनुरागावस्था तथा तृतीय अंक में मिलने का उपाय होने पर उदयन को प्रियदर्शिका की प्राप्ति की आशा तो है पर इसमें विघ्नों की संभावना है, क्योंकि वासवदत्ता द्वारा प्रियदर्शिका को उदयन की दृष्टि पथ से अलग रखा जाता है।

4. **नियताप्ति -** विघ्नों के दूर हो जाने पर जब नायक को फल की प्राप्ति सुनिष्चित हो तो यह नियताप्ति है। वासवदत्ता द्वारा प्रियदर्शिका को पहचान लेना ये सब घटनाएँ विघ्नों को दूर करके फल की प्राप्ति को सुनिष्चित करती है।

5. **फलागम -** इष्ट फल की प्राप्ति होने पर फलागम की अवस्था होती है। चतुर्थ अंक में वासवदत्ता द्वारा उदयन के हाथ में प्रियदर्शिका को अर्पित किया जाना फलागम की अवस्था है।

पाँच अर्थप्रकृतियाँ तथा पाँच कार्यावस्थाओं का क्रमषः संयोग संधियाँ कहलाता है। इस प्रकार ये संधियाँ पाचँ होती है -मुख, प्रतिमुख, गर्भ, अवमर्श और उपसंहप्ति/निर्वहण।

1. **मुख -** बीज नामक अर्थप्रकृति तथा आरंभ नामक कार्यावस्था के संयोग से मुख संधि की रचना होती है। प्रथम अंक में दृढ़वर्मा का कंचुकी द्वारा स्वागत कथन के संवाद से प्रारंभ होकर प्रथम अंक के अंत तक का भाग मुख संधि के अंतर्गत रखा जा सकता है।

2. **प्रतिमुख -** बिन्दु नामक अर्थप्रकृति तथा यत्न नामक कार्यावस्था के संयोग से प्रतिमुख नामक संधि की रचना होती है। द्वितीय अंक में उदयन को देखकर प्रियदर्शिका अनुराग से भर जाती है। तृतीय अंक में

www.ignited.in

मनोरमा द्वारा वत्सराज उदयन से प्रियदर्शिका को मिलाने का प्रयास प्रतिमुख संधि है।

3. **गर्भ -** पताका नामक अर्थप्रकृति तथा प्राप्त्याशा नामक कार्यावस्था के संयोग से गर्भसंधि की रचना होती है। इस नाटिका में वासवदत्ता का वृत्तान्त पताका कथा है, जो नायक को फल प्राप्ति में सहायक है। कौमुदीमहोत्सव कें अवसर पर नाटकाभिनय में उदयन को प्रियदर्शिका से मिलन की आशा होती है, परन्तु इसमें विघ्न उपस्थित होता है। पुनः चतुर्थ अंक में जब उदयन कहते है कि देवी की कृपा के बिना मिलना असंभव है। तो यह अंश गर्भसंधि के अंतर्गत आता है।

4. **अवमर्श -** प्रकरी नामक अर्थप्रकृति तथा नियताप्ति नामक कार्यावस्था के संयोग से अवमर्श नामक संधि की रचना होती है। जब कलिंगराज के वध तथा दृढ़वर्मा के राज्य में प्रतिष्ठित होने की प्रसन्नता में विदूषक वासवदता से कहता है कि उदयन की पूजा करे तथा कैदी को मुक्त कर दें। यह अवमर्श संधि है।

5. **निर्वहण -** अर्थप्रकृति और फलागम नामक कार्यावस्था के संयोग से निर्वहण नामक संधि की रचना होती है। चतुर्थ अंक में उदयन द्वारा प्रियदर्शिका रूपी फल को प्राप्त करना निर्वहण संधि है।

प्रियदर्शिका नाटिका में अनेक सन्ध्यंगो की योजना भी की गई है।

शास्त्रीय दृष्टि से नाटिका का मूल्यांकन

प्रियदर्शिका को उपरूपकों की श्रेणी में रखा जाता है। यह नाटिका है। नाटिका में नाटक एवं प्रकरण की कुछ विशेषताएँ आ जाती है। नाटक के समान इसका नायक धीरललित एवं प्रख्यात होता है। परन्तु इसका कथानक प्रकरण के समान कविकलिपत होता है। अंगीरस श्रृंगार, चार अंक, एवं स्त्री पात्रों की प्रधानता होती है। अन्तपुर से सम्बद्द कन्या इसकी नायिका होती है। वह संगीत में निपुण होती है। नायक नायिका के प्रति प्रवृत्त तो होता है परन्तु ज्येष्ठा प्रगल्भा पत्नी से भयभीत होता है। उसी की कृपा से नायक-नायिका का मिलन संभव होता है। इसमें श्रृंगाररस के अनुरूप कैशिकी वृत्ति, एवं पाँच संधियाँ होती है।

प्रियदर्शिका नाटिका में ये सारी विशेषताएं परिलक्षित होती है। इसका नायक उदयन इतिहास प्रसिद्ध, धीरललित नायक है जो अपनी ज्येष्ठा पत्नी के प्रति अनुकूल रहते हुए दूसरी नायिका को प्राप्त करना चाहता है। वह कला एवं संगीत का प्रेमी है। नाटिका का कथानक प्रायः कविकल्पित है। इसका अंगीरस श्रृंगार, चार अंक एवं स्त्री प्रात्रों की प्रधानता है। अंतःपुर से संबंध राजकुमारी प्रियदर्शिका इसकी नायिका है। वह संगीत में निपुण है। उदयन की प्रवृत्ति प्रियदर्शिका के प्रति होती है किन्तु वह वासवदत्ता से सदा शंकित होता है। किन्तु उसी की सहमति से उदयन को प्रियदर्शिका प्राप्त होती है। अन्तःपुर में सुलभ गीत, भोगविलास, कामचेष्टा आदि का आयोजन होने से इस नाटिका में कैशिकी वृत्ति है। नाट्यशास्त्र की परम्परा के अनुसार कवि ने प्रियदर्शिका नाटिका को चार अंको में विभाजित किया है। प्रत्येक अंक में एक/एक से अधिक द्रश्यों की योजना है। प्रियदर्शिका के अंको तथा दृष्यों की योजना की विशेषता अन्य रूपकों में सामान्यतः प्राप्त नही होता है।

निष्कर्ष

किसी भी नाटिका में वर्णित पात्रों के आचार-विचार एवं विभिन्न घटनायें वस्तु के अंतर्गत आते हैं। श्रीहर्ष की नाटिका में वस्तु धर्म का पालन पूरी निष्ठा से किया गया है। इसमें पंच अर्थप्रकृतियाँ (बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य) तथा पंच कार्यावस्थाएँ (आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति, और फलागम) पंच संधियाँ (मुख प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श एवं अवमर्श) तथा चैसठ संध्यंगो का प्रयोग श्रृंगाररस, कैशिकी वृत्ति, इत्यादि का प्रयोग कुशलता के साथ नाट्यकारों के द्वारा किया गया है। प्रियदर्शिका में प्रयुक्त भाषा एवं शैली भी सरस एवं रोचक है। नाट्यकार हर्ष ने अपनी नाटिकाओं में छन्द पूर्ण योजनाबद्ध तरीके से किया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हर्ष विरचित प्रियदर्शिका नाटिका सभी नाट्यशास्त्रीय गुणों से परिपूर्ण है। यह नाटिका सफल हृदयों का मनोरंजन करने में पूर्ण समर्थ एवं सक्षम है। अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि हर्ष विरचित प्रियदर्शिका नाटिका एक सफल नाटिका है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

त्यागी, अर्चना - नाट्यशास्त्रीय वस्तु विवेचन (शोध प्रबन्ध) संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 1994

नेगी, दीपा - प्रियदर्शिका नाटिका का अध्ययन (लघु शोध प्रबन्ध), दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, 1980

www.ignited.in

चक्रवाल, इन्द्र - भारतीय नाट्य परम्परा और अभिनय दर्पण, चैखम्बा संस्कृत प्रकाशन, दिल्ली 1986

सिन्हा, जयश्री - संस्कृत नाटिका विमर्श संस्कृत विभाग, बिहार विश्वविद्यालय बिहार, कैपिटल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली - 1986

गिरी, कपिलदेव - वृषभानुजा, चैखम्बा ओरियन्टालिया दिल्ली, 1989

धनंजय - दशरूपकम् (सम्पादक-श्री निवास शास्त्री) साहित्य भण्डार, मेरठ, 1981

श्रीहर्ष - प्रियदर्शिका नाटिका (डॉ. कृष्ण कुमार) राजकीय विश्वविद्यालय श्री नगर, गढवाल 1980

प्रमिला, कुमारी - संस्कृत नाटिकाओं का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन, संजय प्रकाशन, दिल्ली, 2006

धनंजय - दशरूपकम् (सम्पादक- डॉ. वैजनाथ पाण्डेय), मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली, 1969

हर्षदेव - रत्नावली नाटिका (सम्पादक - प्रो0 शिवबालक द्विवेदी), ग्रन्थम् रामबाग, कानपुर, 1983

चक्रवाल, इन्द्र - उपरूपकों का उद्भव एवं विकास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1986

दीक्षित, सुरेन्द्रनाथ - भरत एवं भारतीय नाट्यकला, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1970

विल्हण - कर्णसुन्दरी (सम्पादक - श्री दुर्गाप्रसाद एवं परब), काव्यमाला, संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 1988

राजशेखर - विद्धशालभंजिका (सम्पादक - श्री बाबूलाल शुक्ल शास्त्री), चैखम्बा ओरियन्टालिया, वाराणसी, 1976

विश्वनाथ - चन्द्रकला (सम्पादक - जयशंकर त्रिपाठी) लखनउ प्रकाशन केन्द्र, 1980

भरत - नाट्यशास्त्र (सम्पादक - मनमोहन घोष) ग्रन्थालय प्रा0 लि0, कलकता, 1967

Corresponding Author

Dr. Kumari Pramila*

Flat No. 606/F, Mundeshwari Enclave, Khajpura, Patna-14, Bihar